nbt.india
एक: सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

# नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

मई 2014 वर्ष 19, अंक 5

## राज्य संसाधन केंद्र : एक परिचय

भारत में व्यावसायिक वयस्क शिक्षा संगठनों के बीच राज्य संसाधन केंद्रों (स्टेट रिसोर्स सेंटर्स) ने स्वयं के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। 1980 में जहाँ केवल 14 राज्य संसाधन केंद्र थे, वहीं आज इनकी संख्या बढ़कर 29 हो गई है। स्वयंसेवी संगठनों अथवा विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित इन रा.सं. केंद्रों से अकादेमिक एवं तकनीकी स्रोत सहयोग की उम्मीद की जाती है। ये कार्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन, सामग्री निर्माण, संदर्भित सामग्री के प्रकाशन, नवोन्मेषी परियोजनाएँ, शोध अध्ययन एवं मूल्यांकन द्वारा किए जाते हैं।

राज्य संसाधन केंद्रों की भूमिका के संशोधन, उसमें नई ऊर्जा भरने तथा उसके विस्तार के लिए योजना इस तरह बनाई गई कि इससे न केवल ऐसे केंद्रों की संख्या बढ़े बल्कि उन केंद्रों को कुछ वैसे आधारभूत उपकरणों और स्रोत सुविधाओं से सुसज्जित किया जाए जिससे कि ये केंद्र एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाना शुरू कर दें।

एक अन्य बिंदु जिसकी आवश्यकता पर अब तक जोर दिया जाता रहा है, वह यह कि ये राज्य संसाधन केंद्र अपना स्वैच्छिक चरित्र बनाए रख सकें और इनका कार्य स्वायत्त रूप से चलता रहे। हाल में ऐसे प्रयास किये गए जिससे कि यह सुनिश्चित हो सके कि राज्य संसाधन केंद्र केवल स्वैच्छिक एजेंसियों अथवा उच्चतर शिक्षण संस्थाओं को ही दिए जाएँ। सरकार द्वारा संचालित राज्य संसाधन केंद्रों की अवधारणा को एक नीति के तहत हतोत्साहित किया गया।

राज्य संसाधन केंद्रों को वर्तमान समय में तीन श्रेणियों में रखा गया है—क, ख एवं ग, जिन्हें क्रमशः ₹ 36, 25 एवं 10 लाख वार्षिक अनुदान के रूप में मिलते हैं। नौवीं पंचवर्षीय परियोजना के दौरान राज्य संसाधन केंद्रों को केवल दो भागों, क एवं ख, में बाँटने का प्रस्ताव था जिन्हें क्रमशः ₹ 60 तथा 40 लाख वार्षिक अनुदान के रूप में मिलेंगे। इस श्रेणीकरण (ग्रेडिंग) का आधार कार्य का परिमाण रखा गया। ऊपर की श्रेणी तक पहुँचना प्रदर्शन अथवा बढ़े हुए कार्यभार के आधार पर होना था। इसके साथ ही, अब नए राज्य संसाधन केंद्र निचले स्तर की श्रेणी से ही शुरू होते हैं। चूँकि राज्य संसाधन केंद्र शत-प्रतिशत केंद्र की निधि से संचालित होते हैं, ऐसे में इन केंद्रों को कतिपय वित्तीय नियमों का पालन करना अपरिहार्य होता है और साथ ही वित्तीय अनुशासन भी सुनिश्चित करना होता है।

प्रक्रियाओं को साधारणीकृत करने एवं वृहत्तर जन समुदाय तक पहुँचने के लिए वित्तीय एवं प्रशासनिक शक्तियों का राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण में विकेंद्रीकरण किया गया है। प्रत्येक राज्य से सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत निकाय के रूप में एक साक्षरता मिशन की स्थापना के लिए कहा गया है। इन मिशनों को साक्षरता, उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा परियोजनाओं की मंजूरी के लिए शक्तियाँ दी जाएँगी।

# शिक्षा का उजियारा पहुँच रहा चहुँ ओर

प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल बना लेने का करिश्मा केवल एक ही चीज से संभव है, वह है शिक्षा। शिक्षा सभी तक पहुँचे इसके बारे में सोचते सब हैं, पर इसे करने वाले बहुत कम होते हैं। महाराष्ट्र की दो महिलाएँ वंचितों तक शिक्षा पहुँचाने का काम बखूबी कर रही हैं। पेशे से समाजसेवी रजनी परांजपे ने 1988 में अपनी विद्यार्थी रहीं बीना शेठ लश्करी के साथ 'डोर स्टेप स्कूल' नाम के स्वयंसेवी संगठन (एनजीओ) की नींव रखी। रजनी परांजपे रजनी ताई के नाम से मशहूर हैं और वे पुणे में रहकर डोर स्टेप स्कूल यानी चलती-फिरती पाठशाला का काम देखती हैं। बीना शेठ मुंबई के विभिन्न इलाकों में यही काम करती हैं। रजनी ताई सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं और बीना बाल मनोवैज्ञानिक।

1988 में मुंबई से शुरू हुआ डोर स्टेप स्कूल 1993 में पुणे तक पहुँचा। यह स्कूल सड़क पर घूमने वाले खानाबदोश परिवारों के और सुविधाओं से वंचित बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी लेता है। पुणे में निर्माणाधीन इमारतों में काम करने वाले मजदूरों के बच्चों को इस स्कूल के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। यह स्कूल मुंबई में स्लम क्षेत्र के बच्चों में ज्ञान की ज्योति फैला रहा है। प्रारंभिक शिक्षा देने के बाद ऐसे बच्चों को मुख्यधारा के स्कूलों से जोड़ने की कोशिश की जाती है।

डोर स्टेप के शिक्षा गतिविधि केंद्र विभिन्न जगहों पर विभिन्न चरणों में काम करते हैं, जैसे—बालवाड़ी (प्रारंभिक शिक्षा), साक्षरता कक्षाएँ (बुनियादी भाषा, गणित आदि की शिक्षा), स्कूल परिवहन (विभिन्न जगहों से बच्चों को इकट्ठा करके पढ़ाना या स्कूलों तक पहुँचाना)। इसके अलावा, डोर स्टेप 'स्कूल ऑन व्हील्स' (पहियों पर पाठशाला) नाम की सुविधा भी उपलब्ध करवाता है। दरअसल, यह एक स्कूल है, जिसमें कक्षा में काम आने वाली सभी चीजें मौजूद हैं जिससे सुदूर इलाकों में रहने वाले बच्चों को भी अक्षरों से परिचित करवाया जा सके।

केवल 30 बच्चों से शुरू हुए डोर स्टेप स्कूल से पुणे व मुंबई में आज लगभग 70 हजार बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विदित हो कि पिछले दिनों बीना शेठ लश्करी को शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए राष्ट्रपति द्वारा स्त्री शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रो. रजनी परांजपे को भी समाज सेवा के क्षेत्र में कई सम्मान मिल चुके हैं। दोनों ही ये मानती हैं कि बेहतर भविष्य की बुलंद इमारत शिक्षा की नींव पर ही खड़ी होती है। इनकी इच्छा इस अभियान को अन्य राज्यों में भी शुरू करने की है।

रोचक जानकारी

# एक अस्पताल कलमों का भी

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के धर्मतल्ला में एक छोटी-सी पुरानी दुकान है जो अपने आप में एक अजूबा है। यहाँ दुनियाभर की दुर्लभ और बेशकीमती कलमों का संग्रह है, जिनकी कीमत 1,000 रुपये से लेकर एक लाख रुपये तक बताई जाती है। इस दुकान के मालिक मोहम्मद रियाज का दावा है कि यह पूरे देश में किसी भी किस्म की कलम की मरम्मत का अनोखा केंद्र है। नब्बे साल पहले ब्रिटिश राज में रियाज के दादा ने इस दुकान की शुरुआत की थी, तब फाउंटनपेन सबके जीवन का अनिवार्य हिस्सा होता था। उनके बाद रियाज के पिता ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया और अब रियाज अपने बड़े भाई इम्तियाज के साथ इसे सँभाल रहे हैं। रियाज के दो बेटे भी अगले दो-तीन साल में इस अस्पताल का कार्यभार सँभाल लेंगे। पार्कर से लेकर मोंट ब्लैंक और शेफर्स तक, कलम चाहे दुनिया के किसी भी कोने में बनी हो और कितनी भी महँगी क्यों न हो, रियाज उन सबकी मरम्मत का दावा करते हैं। इसलिए रियाज के दादा जी ने इसका नाम 'कलमों का अस्पताल' रख दिया। रियाज की दुकान पर कोलकाता के अलावा दिल्ली, मुंबई और हैदराबाद तक से ग्राहक आते हैं।

'शुक्रवार', 26 दिसंबर, 2013 अंक से साभार

# राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत पुस्तकें

## मुक्ति का मार्ग

अनीता चौधरी पृ. 20 ₹ 12.00

किसना 10-12 साल का एक अनाथ बालक था। वह बीड़ी बनाने के कारखाने के मालिक को फुटपाथ पर पड़ा मिला था और अब उसी कारखाने में मजदूरी करता था। एक दिन वह पहरेदार की नजर बचाकर वहाँ से भाग निकला। बाद में बेहोशी की हालत में एक मछुआरे के हाथ लगा। मछुआरे ने उसे बेटे की तरह पाला-पोसा, ब्याह किया और सिधार गया। किसना अब स्वयं एक बड़ी हस्ती बन गया था। उसने बाल मजदूरी के विरुद्ध अभियान छेड़ा। बच्चों को छुड़ाकर उनकी पढ़ाई और कौशल विकास की भी कोशिश की। बाल मजदूरी उसकी नजर में कलंक था।

ISBN 978-81-237-5967-8

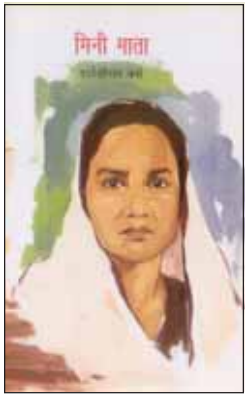


## मिनी माता

परदेशीराम वर्मा पृ. 20 ₹ 7.00

तत्कालीन मध्यप्रदेश (आज के छत्तीसगढ़) से 1952 में सांसद बनीं मिनी माता का जीवन आज एक संदेश बन गया है, पर मिनी माता का अपना जीवन बेहद दुखद रहा था। सौ साल पहले छत्तीसगढ़ क्षेत्र में पड़े अकाल में सगोना गाँव (रायपुर) से एक धनी किसान को अपनी पत्नी व तीन बेटियों समेत असम भागना पड़ा था। दो बेटियाँ तो रास्ते में ही चल बसीं, तीसरी बेटी देवमती बच गई। देवमती ने जल्द ही अपने माता-पिता को बीमारी में खो दिया। एक नर्स ने उसे पाला, बड़ा किया, ब्याह किया। उसी देवमती की बेटी मीनाक्षी बाद में मिनी माता कहलाई। उस किशोरी ने अँग्रेजों के खिलाफ विदेशी कपड़ों की होली जलाने का काम किया था। मिनी माता आज छत्तीसगढ़ में जन-जन में जानी जाती हैं।

ISBN 81-237-3741-6

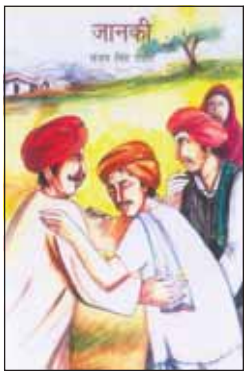


## जानकी

संजय सिंह राठौर पृ. 20 ₹ 12.00

मंगलू अपनी 12-13 साल की बेटी, मुनिया की शादी की बात पक्की कर आया था। मंगलू की मास्टरनी बहन जानकी को पता चला तो उसने इस विवाह का विरोध किया। मंगलू और दद्दा यानी जानकी के ताऊ जानकी पर गुस्सा हुए कि वह अच्छे-भले घर में ठीक हुई शादी के विरुद्ध है। संयोग की बात, गाँव में मुनिया की उम्र की ही एक बच्ची माँ बनने के दौरान दुनिया से चल बसी। गाँव-घर में जब सबको मालूम पड़ा तो बाल विवाह के विरुद्ध माहौल बनने लगा। मुनिया की पढ़ाई की व्यवस्था हुई। जानकी बुआ ने अपनी बातों से घर में सबको बदल डाला।

ISBN 978-81-237-6691-1

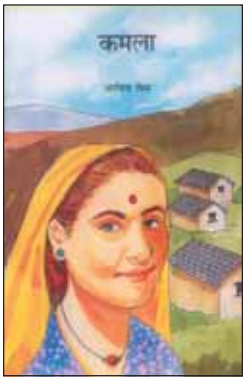


## कमला

अरविंद मिश्र पृ. 16 ₹ 9.00

कमला की कहानी उत्तराखंड की है। कमला का पति फौज में था और वह गाँव में सास-ससुर के साथ रहती थी। स्कूल तक पढ़ी-लिखी थी, सो उसने गाँव में साक्षरता केंद्र खोला। गाँव की निरक्षर महिलाओं ने पढ़ना-लिखना सीखा। ग्राम सुधार के काम में भाग लेने लगी। धीरे-धीरे उसने 'स्वयं सहायता समूह' बनाया। कमला का यह समूह खूब चल निकला। डेयरी व्यवस्था से उसे अच्छी कमाई होने लगी। अन्य महिलाओं को भी इससे आजीविका मिली। एक ऐसा समय आया जब उसके स्वयं सहायता समूह को राज्य स्तर का पुरस्कार मिला और अर्थ राशि भी। कमला की मेहनत और समाज सेवा ने क्षेत्र के सब लोगों का दिल जीत लिया।

ISBN 978-81-237-4771-2

**राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :**
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

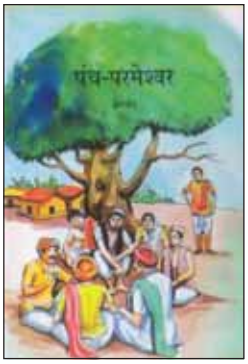


## पंच-परमेश्वर

प्रेमचंद पृ. 28 ₹ 12.00

पंच में परमेश्वर बसता है, इस भावभूमि पर सृजित है यह कहानी। जुम्मन शेख और अलगू चौधरी गाढ़े दोस्त थे, पर एक घटना ने इनमें अलगाव का बीज बो दिया। जुम्मन की खाला ने जुम्मन के खिलाफ जब पंच बैठाई तो अलगू ने जुम्मन की सोच के विपरीत खाला के पक्ष में फैसला सुनाया। इसी तरह, समय के फेर में अलगू चौधरी पंच बने और उन्होंने जुम्मन शेख के प्रतिवादी के विरुद्ध फैसला दिया। दरअसल, पंच के आसन पर बैठते ही दोनों के अंदर न्याय का भाव पैदा हुआ और उन दोनों ने न्याय के पक्ष में अलग-अलग फैसले दिए। दोनों में फिर से दोस्ती कायम हो गई।

ISBN 978-81-237-4885-6

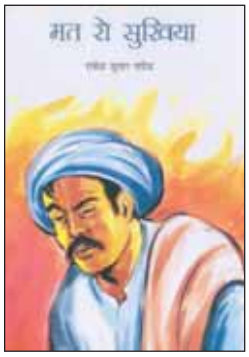


## मत रो सुखिया

पृ. 16 ₹ 12.00

राकेश कुमार पांडेय

गाँव के बाहर, गन्ने के खेत में लगी आग ने पूरे खेत की फसल को जलाकर राख कर दिया। खेत सुखीराम का था। सुखीराम के सामने बेटे छुटके को स्कूल भेजने और बिटिया मुनिया के ब्याह के सपने पूरे करने का संकट आन पड़ा। सुखीराम को जब कुछ न सूझा तो उसने आत्महत्या का विचार किया, पर ऐन वक्त पर पत्नी ने उसे बचा लिया। संयोगवश गाँव के प्रधान भरत भैया को सब बातों की खबर हुई और वे सुखीराम को साथ लेकर सरकारी दफ्तरों में गए, जहाँ उन्हें फसल बीमा और खलिहान बीमा जैसी अनेक योजनाओं की जानकारी मिली। सुखीराम का दुख अब दूर हो गया था।

ISBN 81-237-6923-3

**पाठक मंच बुलेटिन**
बच्चों की द्विभाषी पत्रिका
**वार्षिक शुल्क : ₹ 100-00**

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र
**राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत**
**(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)**
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

# राज्य संसाधन केंद्रों की सूची

### आंध्र प्रदेश
निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
एस पी ए सी ई
ए.एम.एस. कॉलेज कैंपस
उस्मानिया विश्वविद्यालय मार्ग
हैदराबाद-500007
ई-मेल : src_hyd@dataone.in

### असम
निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
मांडोवी अपार्टमेंट्स यूनिट
जी.एन.बी. रोड, अम्बरी
गुवाहाटी-781001
ई-मेल : srcassam@hotmail.com

### उत्तर प्रदेश
निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
लिटरेसी हाउस, पो.ऑ. : मानस नगर
कानपुर रोड
लखनऊ-226023
ई-मेल : directorsrcup@yahoo.co.in

### उत्तराखंड
निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
68/1 सूर्यलोक
राजपुर रोड, देहरादून-248001
ई-मेल : srcddun@sancharuetl.com

### ओडिशा
निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
जनशिक्षा भवन, यूनिट-5
भुवनेश्वर-751001
ओडिशा
ई-मेल : srcbbsr@sancharnet.in

# राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

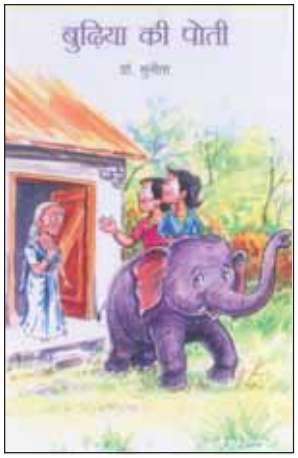


## बुढ़िया की पोती

डॉ. सुनीता पृ. 20 ₹ 14.00

अच्छे व्यवहार से हर किसी का दिल जीता जा सकता है और अच्छे व्यवहार का परिणाम भी अच्छा ही होता है। इसके विपरीत, बुरे व्यवहार से हर किसी को खीझ होती है और इसका परिणाम भी बुरा ही होता है। इसी भावभूमि पर लेखिका ने कथा रूप में यहाँ संदेश दिया है। हारिल गाँव में एक माँ और उसकी दो बेटियाँ – राधा और पन्नगी रहती थीं। राधा सौतेली बेटी थी। माँ ने उसे घर से निकाल दिया। लेकिन उसके अच्छे व्यवहार ने परिस्थिति को अनुकूल बना लिया और उसकी शादी एक राजकुमार से हो गई। पन्नगी नकचढ़ी और बुरे स्वभाव की थी। उसे एक गड़रिया पति रूप में मिला।

दरअसल, राधा को जब सौतेली माँ ने घर से निकाल दिया तो वह चलते-चलते जंगल पहुँच गई। रास्ते में गरमी से व्याकुल एक पत्थर को उसने पानी से नहलाया, गरमी से त्रस्त झुके पड़े पौधे को खड़े होने में मदद की और हाथी के पाँव में गड़े काँटे को निकालकर उसे राहत पहुँचाई। अंत में एक झोपड़ी में एक वृद्धा ने उसे आश्रय दिया। बड़ी होने पर वह एक खूबसूरत युवती बनी और जंगल आए राजकुमार की नजर उस पर पड़ी। वृद्धा दादी ने खुशी-खुशी राजकुमार के राधा से ब्याह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। जब सौतेली माँ ने राधा का यह भाग्य देखा तो पन्नगी को भी वैसे ही घर से निकाल दिया। उसे भी वही सब परिस्थितियाँ मिलीं जो राधा को मिली थीं, पर अपने बुरे व्यवहार से उसने सबको दुखी कर दिया और गड़रिये को पति रूप में पाया। ISBN 978-81-237-6989-9

## रोशनी की माँ

रमेश तैलंग पृ. 16 ₹ 15.00

एक कवितामयी पुस्तक, जिसमें साक्षरता की महिमा का बखान है। रोशनी की माँ स्कूल जाती है, लेकिन थोड़ा-थोड़ा शरमाती भी है। उम्र अधिक होने को लेकर उसके मन में कोई मलाल नहीं है और वह अँगूठा छाप न कहलाए इसलिए पढ़ने की चाहत उसके मन में जगी है। लोग क्या कहेंगे इस बात से वह परेशान नहीं होती।

स्कूल में उसने पहले-पहल अक्षर पहचानना सीखा, फिर किताब पढ़ने लगी। उसने मन से डर को हटा दिया और घर के सारे काम भी साथ-साथ करने लगी। मतदान में वोट देना, पंचायत में अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना भी उसने सीख लिया।

अपनी बेटी को शादी से पहले भली प्रकार पढ़ना-लिखना सिखाना उसने ठान लिया। कमाई में वह बचत भी करने लगी और उसे अपने बचत खाते में भी डालने लगी। बच्चों और रसोई से ऊपर उठकर लगन और मेहनत से उसने एक नया आसमान पा लिया। दरअसल, उसने जो कुछ भी सीखा मेहनत से सीखा और इस प्रकार उसने अपनी किस्मत सँवार ली। ISBN 978-81-237-7091-8


## नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें – अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का

*सूची-पत्र मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :*

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)

**राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत**

**(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)**

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

ई-मेल: office.nbt@nic.in • वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

# राज्य संधाधन केंद्र, भोपाल, म.प्र. के प्रकाशन

## आना मेरे गाँव

जगदीश ज्वलंत

एक महिला गाँव में महिलाओं के लिए आरक्षित सरपंच के चुनाव में खड़ी होती है और जीत जाती है। परंपरा से चली आ रही हिचक के कारण सरपंच यानी दुर्गा की माँ, न ठीक से घूँघट खोल पाती है, न बोल पाती है। लेकिन पति और परिवार के सहयोग-संबल से वह भरी सभा में बोलती है, झंडा भी फहराती है और गाँव के विकास की योजनाओं पर बात भी करती है। सबसे महत्वपूर्ण, निरक्षरता दूर करने का वह बीड़ा उठाती है। बाद में ग्राम पंचायत को आदर्श ग्राम पंचायत का नाम मिलता है।

## सबसे बड़ा दान

इस्माईल लहरी

मतदाता जागरूकता पर एक रोचक कथा। भगवान के मन में आया कि पृथ्वी पर चलकर इस संसार को करीब से देखा जाए। रास्ते में एक मंदिर पर भारी भीड़ देख रुके तो भीड़ ने उन्हें घेर लिया। यह जानकर कि ये साक्षात भगवान ही हैं, सब लोग अपना-अपना गुण बघारने लगे कि उन्होंने कितना-कितना दान किया है। एक गरीब आदमी दूर खड़ा था। भगवान ने जब उससे पूछा कि उसने क्या दान किया है, तो वह भोलेपन से बोला, 'मतदान'। सब हँसने लगते हैं। भगवान कहते हैं, मतदान सबसे बड़ा दान है। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ। बाद में पता चलता है, वह आदमी सपना देख रहा था।

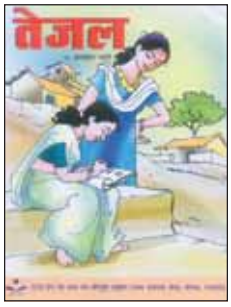


## तेजल

इस्माईल लहरी

तेजल पढ़ी-लिखी नहीं है, पर है दबंग। गुंडे-मवालियों का अच्छा इलाज करती है। उसकी एक सहेली है नसीम। वह पढ़ी-लिखी है। एक अनपढ़ और एक पढ़ी-लिखी की दोस्ती है तो अजीब, पर है सच। नसीम उसे पढ़ने की नसीहत देती है, पर वह हँसकर टाल देती है। एक बार मुहल्ले में हैंडपंप के फालतू पानी में पनपे मच्छर के काटने की वजह से वह बीमार पड़ जाती है तो डॉक्टर ओझा उसका इलाज करते हैं। उसका डेंगू का बुखार ठीक हो जाता है। अब वह गुंडे व उलटा शब्द डेंगू लिखना सीख गई है। आगे और भी सीखेगी।

## मेरे सपने-मेरे अपने

सीमा व्यास

सेवंती सातवीं कक्षा में पढ़ती है। माँ मजदूरी करती है और पिता पंचर लगाते हैं। एक छोटा भाई भी है उसका। सेवंती के पिता बीड़ी पीते हैं, शराब पीते हैं, सेवंती की माँ को मारते हैं। सेवंती को बुरा लगता है। स्कूल जाती है तो कुछ बदमाश लड़के फिकरे कसते हैं, परेशान करते हैं। सेवंती जमकर जवाब देती है। स्कूल में नई मैडम किशोरियों के शरीर में आने वाले बदलावों के बारे में जानकारी देती हैं। सेवंती को माँ-बापू की टोका-टोकी अच्छी नहीं लगती। वह अपने सपने पूरे करना चाहती है।

## उल्टी गंगा

लायकराम मानव

वह उल्टी पैदा हुई इसलिए उसका नाम उसकी नानी ने 'उल्टी गंगा' रख दिया। बड़ी होने पर माँ ने उसे पढ़ाना चाहा तो पिता ने मना कर दिया। वह बकरियाँ चराने लगी। बकरियाँ चराने के लिए वह जहाँ जाती वहाँ स्कूल था। वह खिड़की से झाँककर अध्यापक की पढ़ाई को आत्मसात करती। एक दिन अध्यापक ने उसे अंदर बुलाया और कक्षा में बैठने की इजाजत दी। एक बार उसने गाड़ी को रोककर एक बड़ा रेल हादसा होने से रोका। तबसे उस जगह का नाम उसके नाम पर 'उल्टी गंगा हाल्ट' पड़ गया।

## आओ आवाज उठायें

अनीता सिंह चौहान

रानी बिस्तर पर पड़ी रहती है और कोई छुए तो डर जाती है। वह स्कूल नहीं जाती, क्यों नहीं जाती माँ को भी नहीं पता। एक दिन उसकी हेमा मैडम उसके घर आई। उसे रानी के इस हाल का पता चला तो वह उससे अकेले में मिली। थोड़ा हिलमिल कर बात करने से वह खुल गई और बताया कि संपत नाम के एक आदमी ने खलिहान में उसे पकड़ने की कोशिश की, तब वह भागी जिससे उसे खरोंचें आईं। मैडम ने उसे ढाढ़स बँधाया और हौसला दिया। फिर पुलिस चौकी ले गईं। रानी ने पुलिस को सारी घटना सुना दी। अब सबको इंतजार है अपराधी को सजा मिलने की।

# फूट डालने वालों की हार

धनसिंह को गोपाल से ऐसी उम्मीद नहीं थी। उससे उनकी गहरी दोस्ती थी। उनका मन कहता—गोपाल धोखा नहीं दे सकता। फिर वही मन, रमेश और धनेश की बातों में उलझ जाता। धनसिंह के दिमाग में हलचल मची थी। तभी मुँह लटकाए गोपाल आ धमका। उसको देखते ही धनसिंह उबल पड़े—तूने मुझे धोखा दिया है। तू दोस्ती के नाम पर कलंक है। मैं तुझे गालियाँ दूँ, मारूँ, इससे पहले तू चला जा। फिर कभी अपना मुँह मत दिखाना। जा, यहाँ से जा!

गोपाल कुछ न बोल सका। वह जैसे आया था, वैसे ही चला गया। धनसिंह थाने गए। रास्ते में मन-ही-मन गोपाल को गालियाँ देते रहे।

दोपहर में घर आए। अचानक उनके फोन की घंटी बजी। उनका मन काँप उठा। शरीर थरथराने लगा। यह सोचते हुए फोन उठाया—पता नहीं, अपहरण करने वाले फिरौती की कितनी रकम माँगेंगे। उनकी आँखों के सामने रस्सी से बँधे रोते हुए राजू का चेहरा घूमने लगा। वह काँपते हुए बोले—हलो ऽऽ...! उधर से आवाज आई—'हलो! मैं राजू का मामा बोल रहा हूँ। राजू मेरे पास है। वह कल शहर में घूमते हुए मिला। मैंने उसे रिक्शे पर बैठा लिया। ट्रेन में मेरा आरक्षण था। समय कम था। आपको फोन मिलाया, पर नहीं मिला। ट्रेन देर से भोपाल आई। उतरते ही मैंने आपको फोन किया है। मुझे मालूम है कि आपलोग बहुत परेशान होंगे। राजू ठीक-ठाक है। साथ लाने वाले का भी क्या दोष? आप जानते ही हैं कि राजू बहुत चंचल लड़का है।'

अब धनसिंह कुछ कहने-सुनने की हालत में नहीं थे। फोन रखकर गोपाल के घर की ओर दौड़ पड़े। तब तक वहाँ पुलिस पहुँच चुकी थी। चुपचाप खड़ा गोपाल पुलिस के डंडे भी खा चुका था। धनसिंह झपटकर गोपाल के पैरों पर गिर पड़े। रोने लगे। रोते रहे।

वहाँ भीड़ जुट चुकी थी। किसी को पता नहीं कि धनसिंह क्यों रो रहे हैं। वह भी गोपाल जैसे किसान का पैर पकड़कर रो रहे हैं। अब धनसिंह उठे। गोपाल से लिपट पड़े। वह वैसे ही खड़ा था।

धनसिंह भीड़ के बीच दोनों हाथ फैलाए खड़े हो गए। बोले, "मेरा राजू मिल गया। वह अपने मामा के पास है। मुझे दुख है कि वर्षों की हमारी दोस्ती में पल भर की बात ने आग लगा दी। फूट डाल दी। आज समझ गया। किस तरह लोग घरों में, समाज में, देश में, फूट डालकर आग लगाते हैं। घर के फूटने का असर पूरे समाज पर पड़ता है। हमें फूट डालने वालों, दंगा फैलाने वालों को कामयाब नहीं होने देना है।"

धनसिंह फिर गोपाल से लिपट गए। गोपाल के हाथ धीरे-धीरे उठे। दोनों हाथ धनसिंह की पीठ पर पहुँच गए। धीरे-धीरे दोनों हाथ कसने लगे। अब सुख के आँसुओं की बारी थी।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) द्वारा प्रकाशित तथा देवेंद्र सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'सुख के आँसू' से एक अंश

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/05/2014

# निजी आजादी से जुड़े अधिकार

हर नागरिक को अपनी निजी आजादी के लिए कानूनी अधिकार दिए गए हैं। ये इस प्रकार हैं :

- अपनी बात कहने और अपने विचार जाहिर करने का अधिकार।
- शांति के साथ बिना हथियार इकट्ठा होने का अधिकार।
- कोई भी व्यापार या व्यवसाय करने का अधिकार।
- संघ या संस्था बनाने का अधिकार, या संगठित होने का अधिकार।
- कहीं भी जाने या बसने का अधिकार।
- सम्मान से जीने और रोजी-रोटी कमाने का अधिकार।

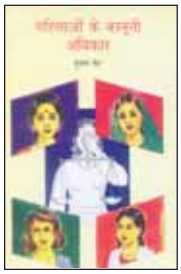

ये सभी अधिकार महिलाओं को भी उतने ही हासिल हैं जितने पुरुषों को। महिलाओं से इन अधिकारों को छीनना कानूनन अपराध है।

लेकिन सचाई क्या है? क्या महिलाओं को ये अधिकार हासिल हैं? महिलाओं को बचपन से चुप रहना सिखाया जाता है। उनके सारे फैसले कोई और तय करता है। चाहे पढ़ाई का मामला हो, या शादी का, वे अपना निर्णय खुद नहीं ले पातीं। शादी के बाद अगर नौकरी करना चाहती हों, या बच्चे कब और कितने चाहिए, इसका फैसला भी वह नहीं कर पातीं। इसका मतलब यह हुआ कि उनके अपने शरीर पर भी उनका अधिकार नहीं।

कानून की नजर में ये बातें गैर-कानूनी हैं। कुछ महिलाएँ ये फैसले खुद ले पाती हैं, परंतु उनकी तादाद बहुत कम है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'महिलाओं के कानूनी अधिकार' (सुषमा मेढ़) से एक अंश

**'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।**

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

**राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत**
**(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)**
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

**भारत सरकार सेवार्थ**

**डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :**
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070